Two Year Dipoloma of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-I

Course Code DJS-101 :संस्कृत–I

- कालूकौमुदी–संधि प्रकरण
- रचनानुवादकौमुदी

Course Code DJS-102: प्राकृत–I

- तुलसीमंजरी– शब्द रूपसिद्धि सूत्रों के साथ
- धात्वादेश
- गद्य सोपान अभ्यास 5–8

Course Code DJS-103: भारतीय दर्शन एवं कर्म प्रकृति

- सांख्य, योग, बौद्ध और चार्वाक दर्शन
- 31 प्रकार की प्रकृतियाँ
- बंधस्थान–मूल एवं उत्तर प्रकृतियों में
- स्थितिबंध–मूल एवं उत्तर प्रकृतियों में

Course Code DJS-104 : स्थिति, बंध एवं क्षयोपशम

- उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं उसके स्वामी
- जघन्य स्थिति बंध एवं उसके स्वामी
- क्षयोपशम

Text Book

- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
- कालुकौमुदी
- तुलसीमंजरी
- एम. हिरियन्ना, भारतीय दर्शन
- आचार्य महाप्रज्ञ, कर्मवाद
- सागरमल जैन, जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास
- गद्यसोपान

Two Year Dipoloma of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-II

Course Code DJS-201 : संस्कृत–II

- कालु कौमुदी–धातु प्रकरण
- रचनानुवाद कौमुदी

Course Code DJS-202 : प्राकृत–II

- तुलसी मंजरी– धातु रूपसिद्धि सूत्रों के साथ
- धात्वादेश
- गद्य सोपान प्राकृत वाक्य रचनाबोध

Course Code DJS-203 : भारतीय दर्शन एवं कर्म मीमांसा

- न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त
- रसबंध एवं प्रदेश बंध मूल एवं उत्तर प्रकृतियों में
- उत्कृष्ट रस बंध एवं उसके स्वामी
- जघन्य रस बंध एवं उसके स्वामी

Course Code DJS-204 : प्रदेश बंध एवं गुणस्थान

- उत्कृष्ट प्रदेश बंध एवं उसके स्वामी
- जघन्य प्रदेश बंध एवं उसके स्वामी
- प्रकृतियों का अन्तर काल और निरंतर काल
- गुणस्थानों का अन्तर काल और निरंतर काल

Text Book

- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
- कालुकौमुदी
- तुलसी मंजरी
- एम. हिरियन्ना, भारतीय दर्शन
- आचार्य महाप्रज्ञ, कर्मवाद
- सागरमल जैन, जैन कर्म सिद्धान्त का उद्‌भव एवं विकास
- गद्य सोपान

Two Year Dipoloma of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-III

Course Code DJS-301 : संस्कृत–III

- कालु कौमुदी कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय
- रचनानुवाद कौमुदी

Course Code DJS-302 : प्राकृत–III

- तुलसी मंजरी–कृदन्त
- तद्धित और प्रेरणार्थक प्रत्यय
- गद्य सोपान, प्राकृत वाक्य रचना बोध

Course Code DJS-303 : जैनन्याय एवं जैन योग

- भिक्षुन्याय कर्णिका
- जैनदर्शन में प्रमाण–मीमांसा
- बंधनकरण
- वीर्य का स्वरूप
- वीर्य और योग का संबंध
- योग विचारणा के अधिकार
- योग स्थान और स्पर्धक

Course Code DJS-304 :लब्ध वीर्य एवंवर्गणा

- लब्धि वीर्य और उपयोग वीर्य
- स्पर्धक और अंतर प्ररूपणा
- वर्गणा प्ररूपणा
- वृद्धि प्ररूपणा
- जीवाल्प बहुत्व प्ररूपणा

Text Book

- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
- कालुकौमुदी
- तुलसीमंजरी
- एम. हिरियन्ना, भारतीय दर्शन
- आचार्य महाप्रज्ञ, भिक्षुन्यायकर्णिका
- सागरमल जैन, जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास
- गद्यसोपान

Two Year Dipoloma of Jain Scholar
(Online and Ofline)
Semester-IV

Course Code DJS-401 :संस्कृत–IV

- कालु कौमुदी–समास प्रकरण
- रचनानुवाद कौमुदी

Course Code DJS-402 :प्राकृत–IV

- तुलसी मंजरी–वाक्य रचना बोध अभ्यास 19–25
- गद्य सोपान
- उत्तराध्ययन अध्ययन गाथा

Course Code DJS-403 : भारतीय दर्शन एवं जैन कर्म मीमांसा

- त्रिलोक संरचना गणितीय विवेचन सहित
- बंधनकरण
- स्नेह प्रत्यय स्पर्धक परिभाषा
- नम प्रत्यय स्पर्धक
- षट्स्थान प्ररूपणा
- प्रयोग प्रत्यय स्पर्धक प्ररूपणा

Course Code DJS-404 : कर्मप्रकृति

- कर्म प्रकृतियों में दलिक–विभागविधि
- कर्मप्रदेशों का अल्पबहुत्व
- रसबंध प्ररूपणा
- उपशमनाकरण

Text Book

- डॉ. कपिल देव द्विवेदी, रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
- कालुकौमुदी
- तुलसीमंजरी
- जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
- आचार्य महाप्रज्ञ, भिक्षु न्याय कर्णिका
- सागरमल जैन, जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास
- गद्यसोपान